अध्याय बीसवाँ

॥श्री गणेशाय नमः॥ श्री सरस्वत्यै नमः॥ श्री सिद्धारूढ़ाय नमः॥

"कामधेनु के समान आप भक्तों को मनचाहा सब कुछ देते हैं तथा पेड़ के समान भेदभावरहित होकर दुष्टों पर भी दया करते हैं। जिससे उनकी आप के प्रति भक्ति बढ़ती जाती है और इस सांसारिक जीवन के भय का निरसन करते हुए आप लोगों का उद्धार करते हैं।"

सतगुरु सिद्धारूढ़ स्वामीजी आप की जयजयकार हो। रहस्यपूर्ण स्वरूपज्ञान (आत्मज्ञान) को न समझने वाले हम जैसे मूर्ख लोगों को आप उद्धार करते हैं, इसलिए मैं आप की शरण में आया हूँ। पंचतत्वों से बने इस शरीर को प्राप्त करने के पश्चात, त्रिगुणों के जाल में फँसकर हम घरगृहस्थी का खेल खेलते खेलते दुख सहते रहते हैं, इसलिए अब आप ही हम पर दया कीजिए। स्वरूपज्ञान का विस्मरण होने के कारण, आप 'एक' ही होने के बावजूद भी हम ने आप में 'अनेकता' देखी, चित्त त्रिगुण के पासी में अटक गया, फल की कामना करते हुए कर्म किए, इसलिए सांसारिक दुखों की खाई में गिर पड़े। यह संसार जन्म-मृत्यु से भरा है तथा यहाँ चारो ओर कर्मजाल (कर्म करने के कारण मनुष्य कर्मबंधन में फँस जाता है) फैला हुआ है। इसीलिए ये जीवात्मे घोर भ्रम से भ्रमित हो जाते हैं। काल (समय) एक शिकारी की भाँति ताक में रहता है तथा कहता है की देखता हूँ यह जीवात्मा कैसे मेरे चंगुल से छुटकारा पाता है और पाश में फेंसाकर जीवात्मा को अपनी ओर खींच लेता है। उसके चंगुल में फँसने के बाद जन्म-मृत्यु से छुटकारा नहीं मिलता, क्योंकि वह (काल) एक पलभर भी चैन से रहने न देते हुए, जीवात्मा को बार बार संसारिक चक्र में घुमाता है। जीवात्मा कुछ सत्कर्म करना चाहता है, तब उसके मन में उन कर्मों के फल की कामना उत्पन्न करके, जबरदस्ती उसे स्वयं से बांध देता है। इस प्रकार इस जीवात्मा को जन्म-मृत्यु से भरे इस संसार से छूटकर अक्षय आनंद प्राप्त करने का उपाय कहाँ है? एक क्षण भी अगर सत्संग हो जाए तब भी जीवात्मा को हृदय में आनंद का अनुभव होता है, जिससे संतों के चरणों पर उसका भाव दृढ़ हो जाता है और उसके पश्चात उसे अन्य कुछ भी अच्छा नहीं

लगता। उसके पश्चात अंत:करण में वैराग्य की भावना उत्पन्न होने के कारण विषयोपभोगों की कामनाएँ नष्ट हो जाती हैं, जिससे वह वेदांतशास्त्र ध्यानपूर्वक सुनता है और उस में उसका मन तल्लीन हो जाता है। एकाग्र मन से सुनने सुनते स्वरूपज्ञान तथा ईश्वर पर उसका विश्वास बढ़ता है। हमेशा एकाग्र होकर चिंतन करने से जीवात्मा तथा परमात्मा एकरूप होते हैं। गुरुकृपा के बिना जीवशिव (जीवात्मा तथा परमात्मा) की एकरूपता का ज्ञान कभी भी नहीं प्राप्त होता, जिस ज्ञान से भवबंधन तथा काल के पाश टूट जाते हैं। इसीलिए, जिसकी कृपा से ज्ञान प्राप्ति हो, ऐसे सतगुरुजी की शरण में जाए और भक्तिभाव से उनका नामस्मरण करें, वर्ना भवभय है| अस्तु। श्रोतागण, अब कहानी की ओर ध्यान दीजिए, जिससे भवबंधन से छुटकारा मिलकर आत्मज्ञान प्राप्त होगा।

जिन्होंने वेदांतशात्र का झंडा फहराया वे सिद्धारूढ़ महाराज भक्तों के कल्याण के प्रति कार्यरत थे। एकबार अनेक भक्तगण इकट्ठा हुए और उन्होंने गुरुनाथजी को भोजन अर्पण करने का निश्चय करके, सातप्पा नाम के एक भक्त को उनका मुखिया नियुक्त किया और सतगुरुजी से बिनती की, "हे सतगुरुमहाराज, यहाँ से पास ही स्थित मावनूर नाम के गाँव में हम जेवनार का आयोजन करना चाहते हैं। आप भी वहाँ सहभोजन के लिए चलिए।" सतगुरुमहाराज ने "तथास्तु" कहा। भक्तों ने उन्हें पालकी में बिठाकर शोभायात्रा के साथ वे मावनूर के लिए निकल पड़े; मार्ग में भजन के सुरों से अंबर गूँज उठा तथा चारो ओर आनंद की लहरें उमड़ पड़ी। सभी लोग मावनूर पहुँचने के पश्चात सिद्धनाथजी को एक पवित्र घर में दिव्य आसन पर बिठाया तथा पूजा का सामान लाकर उनकी षोडशोपचार पूजा की। उसके पश्चात भोजन की व्यवस्था करने के लिए सातप्पा रसोईघर में गया। रसोईघर में हजारो लोगों के लिए खाना बन रहा था। पुलाव बनाने के लिए कड़ाहे में घी गरम किया जा रहा था। कड़ाहे में घी गरम करके उसे पकाये हुए खाने में उँडेलने के लिए सातप्पा ने एक कपड़े से कड़ाहा पकड़ा और वह आगे बढ़ा| परंतु पके हुए खाने के बर्तन की कोर पर कड़ाहा लगाते समय उसके हाथ से कड़ाहा सटककर जोर से नीचे गिर गया और उसके अंदर स्थित उबलता घी चारो ओर बिखर गया। सातप्पा के पूरे शरीर पर उबलते घी की बौछार होने के कारण उसके शरीर पर तत्काल

बड़े बड़े फफोले आ गये और बदन तीव्रता से जलने लगा। "दुहाई हो, सिद्धारूढ़ महाराज," इस प्रकार जोर से चिल्लाते हुए शरीर की पीड़ा असहनीय होने के कारण वह बेहोश होकर जमीन पर गिर पड़ा। उसे देखते ही लोग चारो ओर भागे, कोई उसे लेप लगाने लगा तो कोई तेल लगाने लगा, दूसरे लोग विविध प्रकार के उपाय करने लगे। रसोईघर की घटना सुनते ही गुरुमहाराज तत्काल अपना श्रेष्ठ भक्त सातप्पा के पास पहुँच गये। सातप्पा की दयनीय परिस्थिती देखकर उसकी पत्नी तथा बेटा उसके पास बैठकर आक्रोश करने लगे। उसपर गुरुनाथजी ने कहा, "आप लोग भयभीत न होना। परोपकार करते समय इस प्रकार की दुर्घटना होते ही सतगुरुनाथ हमेशा मदद करते हैं।" फिर उसके शरीर पर हाथ फेरकर सिद्धारूढ़जी ने कहा, "घी ठंड़ा हुआ है इसलिए सातप्पा को अब जल्द ही होश आयेगा।" जिस प्रकार सोए हुए मनुष्य को जगाते है, उसी प्रकार उन्होंने सातप्पा को थपथपाकर जगाया हुआ देखते ही सभी लोग आश्चर्य से दंग रह गये; उन्हों ने स्वामीजी की जयजयकार की। सातप्पा उठकर बैठा और अपने शरीर को छूकर बोला, "अरे! ये क्या? मेरे शरीर पर इतना घी कैसे पोता गया? मैं जल्द ही स्नान करके लौटता हूँ।" ऐसा कहते ही उसके चारो ओर इकट्ठा हुए लोगों की भीड़ देखकर उसे सबकुछ याद आया। अपने पास खड़े हुए सतगुरुनाथजी को देखकर उसका मन आनंद से उमड़ पड़ा। उसने कहा, "हे दयालु सिद्धनाथजी, जब आप हमारे हिमायती हैं, तब स्वयं काल भी हम पर अपना अधिकार नहीं चला सकता। आप काल के भी काल होकर ईश्वर का लीलापूर्ण अवतार हैं," और सिद्धनाथजी के चरण अपने हाथों से पकड़ लिये। तत्पश्चात जब वह स्नान करके लौटा, तब उसके शरीर पर उठे सारे फफोले पूर्णत: नष्ट हुए थे। एक महान कार्य में आया हुआ संकट सिद्धजी की कृपा से टल गया हुआ देखकर सभी को बहुत आनंद हुआ और उन्होंने मिलकर बड़े प्रेम से उनकी पूजा की| उसके पश्चात पाँतियों में बिठाकर लोगों को भोजन परोसा गया। सतगुरुनाथ स्वयं भोजन परोसने लग गये। अपने हाथ में भाकरी टुकडे लेकर वे सभी को निवाले खिला रहे थे। भक्तगण भोजन करते समय, सिद्धमाता स्वयं पाँतियों में घूमकर उनकी आवश्यकतानुसार उन्हें भोजन लाकर परोसती थी। भक्तगण चैन से भोजन करते हुए देखकर सतगुरुजी के चेहरे पर फैले

आनंद को देखकर, स्वादिष्ट भोजन का स्वाद लेने से प्राप्त होने वाले आनंद से कई गुना अधिक आनंद लोगों को हुआ। सभी का भोजन होने के पश्चात सिद्धारूढ़जी भोजन करने बैठे। इस प्रकार भक्तों का कार्य बिना विघ्न पूर्ण हो इसका वे खयाल रखते थे और जिस प्रकार बच्चा आनंदित हुआ देखकर माता संतुष्ट होती है तथा प्रजा को सुखी देखकर राजा मन ही मन आनंदित होता है, उसी प्रकार भक्तों के सुख को वे अपना सुख समझते थे।

उसके पश्चात सिद्धारूढ़जी को पालकी में बिठाकर भजन के घोष में भक्तगण वापस सिद्धाश्रम लौटे; सिद्धनाथजी को पालकी से उतारकर, उनके नाम की जयजयकार करते करते सभी अपने अपने गाँव लौटे। हे सतगुरुमाता, आप, भक्तों पर ममता की छाँव बनकर त्रिभुवन हर्ष से भरने वाली है। अस्तु। इस कथा का लक्ष्यार्थ सुनिए। सातप्पा को एक जीवात्मा समझिए। पत्नी, बच्चे तथा अन्य लोगों को वह मोह रूपी घी बाँट रहा था। मोह पर काबू पा न सकने के कारण वह हाथ से सटक गया, नतिजा ये हुआ की वह अंदरबाहर से जल गया। उसी समय दयालु सतगुरुजी दौड़े चले आए। उन्होंने उसपर बोध रूपी हाथ फेरते ही वह होश में आया और मोह के कारण प्राप्त हुए दुख को भूलते ही, कामनाओं के रूप में उठे हुए फफोले भी नष्ट हो गये। सतगुरुनाथजी आप स्वयं ब्रह्मानंद है, मेरे सिर पर वरदान देने वाला आप का हाथ रखकर मुझे वह मार्ग दिखाईए, जिस पर चलकर मेरा भवभय पूर्ण रूप से नष्ट होगा। श्रोतागण, अगले अध्याय में बयान की हुई सुरस कथा ध्यान से सुनिए, जिससे एक क्षण में उनके सारे दोष जलकर खाक हो जाएंगे। अस्तु। जिसका श्रवण करने से सभी पाप भस्म हो जाते हैं, ऐसे इस श्री सिद्धारूढ़ कथामृत का मधुर सा यह बीसवाँ अध्याय श्री शिवदास श्री सिद्धारूढ़ स्वामीजी के चरणों में अर्पण करते हैं। सबका कल्याण हो।

॥ श्री गुरुसिद्धारूढ़चरणारविंदार्पणमस्तु ॥